International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 24-10-2025, Accepted: 23-11-2025, Published: 08-12-2025
Volume 7, Issue 6, 2025, Page No. 92-95

1857 ई० का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा राजमहल

संदीप कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
'राजमहल' वर्तमान में भारत के झारखंड राज्य के पूर्वी क्षेत्र में अवस्थित संताल परगना संभाग के साहिबगंज जिले में स्थित एक सामरिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण शहर है। ब्रिटिश शासन के स्थापना के दौरान पलासी, बक्सर एवं उधवा नाला के युद्धों में राजमहल और बंगाल के शासकों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1857 ई० का संग्राम जिसे इतिहासकारों ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा है, ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के लगभग 100 वर्षों के पश्चात भारतीय जनमानस की पहली सशक्त प्रतिक्रिया थी। ब्रिटिश कंपनी की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सैनिक नीतियों ने भारतीयों को संग्राम के लिए बाध्य कर दिया। इस संग्राम में झारखंड के राजमहल क्षेत्र के लोगों द्वारा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी। प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से इस तथ्य की पुष्टि करने का प्रयास किया गया है कि 1857 ई० के संग्राम का आरंभ झारखंड–बिहार के संदर्भ में सर्वप्रथम राजमहल क्षेत्र के रोहिणी में (वर्तमान झारखंड के देवघर जिले में अवस्थित) 7–12 जून, 1857 ई० को हुआ था। आरा, जो बिहार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, रोहिणी के बाद 1857 ई० के संग्राम में सम्मिलित हुआ था। राजमहल क्षेत्र में 1857 ई० के संग्राम की चिंगारी तब भड़की जब भागलपुर की 5 वीं अस्थाई सेना ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध प्रतिरोध की। इस संग्राम को ब्रिटिश शासन द्वारा बलपूर्वक दबा दिया गया था। 1855 ई० में हुए संताल हुल के तुरंत बाद होने के कारण राजमहल क्षेत्र के संतालों ने 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया, किन्तु राजमहल क्षेत्र में संताल हूल एक ऐसी घटना हुई थी, जिसने 1857 ई० के संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की थी। 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का राजमहल क्षेत्र के साथ सम्पूर्ण भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश रेजिमेंट को यहाँ से हटाकर भागलपुर ले जाना पड़ा था। इस संग्राम में बंगाली समुदाय को विशेष हानी उठानी पड़ी थी, क्योंकि संताल परगना क्षेत्र में बंगाली समुदाय के लोग अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। इस प्रकार 1857 ई० में भारत में विस्तृत और वृहद् संग्राम हुआ, जिसने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी।

मूल शब्द: बंगाली समुदाय, ब्रिटिश रेजिमेंट, रोहिणी, संग्राम, संताल परगना, सामरिक

भूमिका

'राजमहल' वर्तमान में भारत के झारखंड राज्य के पूर्वी क्षेत्र में अवस्थित संताल परगना संभाग के साहिबगंज जिले में स्थित एक सामरिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण शहर है। झारखंड का यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर विश्व के प्राचीनतम पर्वत श्रृंखला 'राजमहल की पहाड़ियों' में अवस्थित है, जो गंगा नदी से स्पर्श करती 190 किलोमीटर उत्तर–दक्षिण में लगभग संताल परगना संभाग (वर्तमान गोड्डा, देवघर, दुमका, जामताड़ा, साहिबगंज, पाकुड़ जिले) तक फैली हुई है। राजमहल की पहाड़ियाँ अपने जीवाश्मों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। है। राजमहल की ऐतिहासिकता प्राचीन काल से ही प्रमाणित है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राजमहल क्षेत्र का वर्णन प्राचीन काल की साहित्यों में मिलता है। पतितपावनी गंगा नदी के तट पर अवस्थित ऐतिहासिक शहर राजमहल जिसे महाभाष्य में पतंजलि द्वारा 'कलिकावन', बौद्ध काल में 'कजंगल', कनिंघम के अनुसार 'कांकजोल' और 'किउ–चिंग–किउ लो' प्राचीन काल में 'नरीखंड', एवं 'गंगरीदइ'; मध्यकालीन ग्रन्थ आईन–ए–अकबरी में 'गंगजुक', मानसिंह द्वारा 'अकबरनगर' एवं ब्रिटिश काल में 'दामिन–ई–कोह', 'जंगल–महाल' एवं 'जंगल–तराई' के नाम से जाना जाता था। मुग़ल काल में राजमहल 'आकमहल' या 'आगमहल', 'बंगाल का प्रवेशद्वार', 'टकसाल शहर' (मिन्टटाउन), 'बन्दरगाह शहर', 'बंगाल की कुंजी', 'बंगाल की चाभी' एवं जहांगीरनामा के अनुसार 'कब्रगाह' के नाम से भी प्रसिद्ध था। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति एवं सामरिक महत्ता के कारण राजमहल मध्यकाल 1592 ई० से सम्पूर्ण तत्कालिन बंगाल जिसमें वर्तमान बिहार, उड़ीसा, झारखंड, पूर्वोत्तर राज्यों एवं बांग्लादेश क्षेत्र सम्मिलित थी, की राजधानी हुआ करती थी, जिसे अकबर के हिन्दू सेनापति मानसिंह द्वारा मुख्य रूप से 1592 ई० में तेलियागढ़ी दर्रे और गंगा नदी पर सामरिक नियंत्रण के लिए राजमहल को बंगाल की राजधानी बनाई गयी। आधुनिक काल में जनरल कनिंघम, जॉन मार्शल, निकोलस डी. ग्रेएफ, विलियम होजेज, गेब्रियल वाउटन, विलफोर्ड, बुकानन आदि ने राजमहल क्षेत्र का भ्रमण किया और अपने विवरणों में ऐतिहासिक शहर राजमहल का उल्लेख किया है। राजमहल जनजातिय बहुल क्षेत्र रहा है। यहां निवास करने वाले जनजातियों में पहाड़िया और संताल प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में 1772–1780 ई० पहाड़िया विद्रोह, 1780–85 ई० तिलका मांझी के नेतृत्व में तिलका मांझी विद्रोह और सिद्धो, कान्हू, चाँद और भैरव के नेतृत्व में 1855 ई० में संताल हूल हुए, जिसने राजमहल क्षेत्र में 1857 ई० के संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार करने में सहायक सिद्ध हुई।[1]

1857 ई० की क्रांति 10 मई 1857 ई० को मेरठ में सिपाही विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुई थी। इसका तात्कालिक कारण नए एनफील्ड राइफल में चर्बी युक्त कारतूस का इस्तेमाल था, जो हिंदू और मुस्लिम दोनों सैनिकों के लिए धार्मिक रूप से आपत्तिजनक था।[2] यह विद्रोह जल्दी ही दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झांसी और ग्वालियर जैसे शहरों के साथ–साथ बिहार के आरा और झारखंड के देवघर, राजमहल, हजारीबाग, राँची आदि आदि क्षेत्रों में फैल गया। 1857 ई० का संग्राम जिसे इतिहासकारों ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा है, ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के लगभग 100 वर्षों के पश्चात भारतीय जनमानस की पहली सशक्त प्रतिक्रिया थी।[3] 1857 ई० के संग्राम का आरंभ झारखंड–बिहार के संदर्भ में सर्वप्रथम राजमहल क्षेत्र के रोहिणी में (वर्तमान झारखंड के देवघर जिले में अवस्थित) 7–12 जून, 1857 ई० को हुआ था।[4] इस स्थान पर मेजर मैक्डोनाल्ड के अधीन 5वीं रेजिमेंट की स्थापना की गई थी।[5] 1855 ई० में हुए संताल हुल के तुरंत बाद होने के कारण राजमहल क्षेत्र के संतालों ने 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मे भाग नहीं लिया[6], किन्तु राजमहल क्षेत्र में संताल हूल एक ऐसी घटना हुई थी, जिसने 1857 ई० के संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की थी। 1857 ई० का संग्राम जिसे वी. डी. सावरकर ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा है,।[7]

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य राजमहल क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम (1857 ई०) की भूमिका का वर्णन करना है। साथ ही इस स्वतंत्रता संग्राम (1857 ई०) में राजमहल क्षेत्र से भाग लेने वाले जनजातियों, गैर जनजातियों, महिलाओं, कृषकों, जमींदारों (भू–स्वामियों), ब्रिटिश सैनिकों, शिक्षित वर्गों आदि की भूमिकाओं, भाग लेने के कारणों एवं प्रभावों का अध्ययन करना है।

प्रस्तुत शोध आलेख हेतु एक मिश्रित, अंतर–विषयक शोध विधि एवं दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। विभिन्न साहित्य समीक्षा, केस स्टडी, कार्य क्षेत्र अध्ययन, खोज और विशेषज्ञ साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों को एकत्र किया गया है। यह आलेख मुख्यतः प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतो पर आधारित है तथा प्राप्त साक्ष्यों एवं तथ्यों की जाँच में उनके प्रमाणिकता को ध्यान में रखा गया है। इसमें औपनिवेशिक और मौखिक स्रोतों को भी जानकारी का स्रोत बनाया गया है।

1857 ई० का संग्राम और राजमहल क्षेत्र

1857 ई० के संग्राम में राजमहल के निकट बरहाइत से सूरी के मुख्यालय जाने वाली 32 वीं नेटिव इन्फेंट्री की दो कंपनियों के दल ने रास्ते में रामपुरहाट के पास विद्रोह कर दिया। वर्तमान झारखण्ड के संदर्भ में 1857 ई० के संग्राम का आरंभ संताल परगना के देवघर जिले के गांव रोहिनी में 12 जून 1857 ई० को संध्याकाल में हुई। रोहिनी 5 वीं इर्टेगुलर कैवलरी (घुड़सवार सेना) का मुख्यालय था।[8] अगस्त के मध्य में भागलपुर में 5 वीं इर्टेगुलर रेजीमेंट ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध उठ खड़ी हुई और रोहिनी स्थित अपने रेजीमेंट की टुकड़ी से जा मिली।[9] इस स्थान पर मेजर मैक्डोनाल्ड के अधीन 5वीं रेजिमेंट की स्थापना की गई थी। राजमहल–भागलपुर मार्ग के समीप बौंसी स्थिति कमांडेंट को क्रांतिकारियों के आने की सूचना संदेशवाहक द्वारा पूर्व में ही प्राप्त चुकी थी। देवघर, राजमहल में भी सूचना पहुंच गई थी।[10] दुमका में स्वयं 5 वीं इर्टेगुलर टुकड़ी के सवारों का दल था। इस दल के एक सिपाही श्यामानंद मुखर्जी ने सरकार की सहायता की। उसने खजाने से 4000 रूपए और बंदियों को सूरी भेजने की व्यवस्था की। संतालों को अँग्रेजी सेना का अंग बनाया गया। उन्हें हल्के रायफल तथा उनके पारंपरिक हथियार कुल्हाड़ी से लैस कर दिया गया।[11]

1857 ई० के संग्राम में राजमहल में विद्रोह का तात्कालिक कारण था, कुछ जमींदारों द्वारा रैयतों का लगान बढ़ाना। राजमहल क्षेत्र के रैयत काफी क्रुद्ध हो उठे और उन्हे 1857 ई० के संग्राम में भाग लेना पड़ा।[12] सरकार ने तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर को राजमहल में असंतोष फैलने से रोकने के लिए तत्काल उपाय खोजने का जिम्मा सौंपा। उसे संताल परगना के पुरे जिले के लिए एक बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था की योजना बनाने का भी निर्देश दिया गया। 1857 ई० के संग्राम के बाद पुनः राजमहल तथा संताल परगना के लोग कोई विद्रोह में सम्मिलित न हो इसके लिए लेफ्टिनेंट गवर्नर दामिन–ए–कोह में शोषण और अत्याचार फैलने से रोकने के लिए 'कोट ऑफ वार्ड' द्वारा किया प्रत्येक पट्टा रद्द करने, संताल क्षेत्रों को भागलपुर डिवीजन से तत्काल अलग कर पूरे जिले में पिछले वर्ष पारित अधिनियम के प्रावधानों को लागू करना तथा संताल परगना में सर्वथा योग्य और दृढ़ अधिकारी की पदस्थापना आदि कार्य करना था।

1857 ई० का संग्राम और रोहिणी

1857 ई० के संग्राम में संताल परगना के देवघर जिले के रोहिणी गांव में स्थित पांचवी और अनियमित घुड़सवार सेना (फिफ्थ इरेग्यूलर कावलरी) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1857 ई० के संग्राम के कई कारणों में से एक सैनिक असंतोष था, जो यूरोपीय सैनिकों के साथ भेदभाव और नए कारतूसों के उपयोग से जुड़ा था। 1857 ई० में मेरठ में विद्रोह के बाद खबर रोहिणी में भी पहुंची थी।[13] 12 जून, 1857 ई० की तारीख थी, जब मेजर मैकडोनाल्ड और उसके दो साथी अफसर नॉर्मन लेस्ली तथा डॉ. ग्रांट घर पर शाम की चाय पी रहे थे। तीन सैनिकों अमानत अली, सलामत अली और शेख हारून इन तीन सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और लेफ्टिनेंट नॉर्मन लेस्ली की हत्या कर दी।[14] लेफ्टिनेंट नॉर्मन लेस्ली की मौके पर मृत्यू हो गई,[15] जबकि डॉ. ग्रांट और एक अन्य अफ़सर घायल होने के बाद जान बचाकर किसी तरह भागे। रोहिणी में हुए विद्रोह से पूरे बिहार–झारखंड में क्रांति की लहर फैल गई। रोहिणी छावनी के विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजी हुकूमत ने भागलपुर से बड़ी तादाद में घुड़सवार फौजी बुलाई। इस गांव में अंग्रेजों ने काफी जुल्म ढाए और मासूम बच्चों तक को मार डाला। दो दिन बाद ही अमानत अली, सलामत अली और शेख हारून भी लड़ते हुए पकड़े गए। रोहिणी में ही इन तीनों सैनिकों का कोर्ट मार्शल हुआ और बगैर किसी न्यायिक प्रक्रिया के 16 जून, 1857 ई० को आम के पेड़ से लटका कर तीनों को फांसी दे दी गई।[16]

अंग्रेजों को रोहिणी से अपना रेजीमेंट हटाकर भागलपुर ले जाना पड़ा। इतिहासकार बैकुंठ नाथ झा ने अपनी पुस्तक 'मातृ–बंधन मुक्ति–संग्राम में संथाल परगना' में इस क्रांति का जिक्र करते हुए लिखा है कि "महामृत्यु के पूर्व इन देशभक्त क्रांति वीरों ने नमाज अदा की, धरती पर माथा टेका और सिंहनाद करते हुए कहा, आज ही के दिन, उस काले 16 जून, 1757 ई० को सत्तालोलुप मिरज़ाफ़र ने पाक कुरान शरीफ पर हाथ रखकर झूठी कसम खाई थी और वतनपरस्त नवाब सिराजुद्दौला के साथ गद्दारी की थी, उसी कलंक को आज हम अपने लहू से धो रहे हैं। अलविदा।"[17] जिस मैदान में गोरी फौजी ठहरी थी, उसे स्थान पर बसा मुहल्ला आज 'गोरीडीह' के नाम से जाना जाता है।[18] कई शोधकर्ताओं का कहना है कि रोहिणी में 1857 ई० का संग्राम बैरकपुर छावनी से पहले हुआ था। अंग्रेजों ने जिस स्थान तीनों क्रांतिकारियों को फांसी दी थी, वह स्थान आज 'फंसियाबारी' के नाम से जानी जाती है। बहरहाल, अब इस स्थान पर एक स्मारक है, जहां तीनों शहीदों की प्रतिमाएं हैं।

1857 ई० का संग्राम एवं राजमहल क्षेत्र के पहाड़िया जनजाति

पहाड़िया जनजाति का 1857 ई० की क्रांति में योगदान और इसके स्वतंत्रता सेनानियों के संबंध में बहुत कम लिखी गई है। अपने क्षेत्रों में उन्होंने बाहरी सत्ता का हमेशा विरोध किया और अपनी स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखी।[19] 1857 ई० के संग्राम में पहाड़िया जनजातियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ पहाड़िया जनजातियों ने संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया, जबकि कुछ ने निष्क्रिय प्रतिरोध अपनाया।[20] कुछ पहाड़िया जनजातियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हथियार उठाएं जबकि अन्य ने उन्हें शरण और सहायता दी। पहाड़िया जनजातियों के क्षेत्र, जैसे कि राजमहल की पहाड़ियों ने क्रांतिकारियों के लिए प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की।[21] राजमहल क्षेत्र क्रांतिकारियों के लिए सुरक्षित स्थान बन गया, जहां वे अपने लक्ष्यों को संगठित कर सकते थे और ब्रिटिश सेना से बच सकते थे।[22] पहाड़िया जनजातियों ने अपने पारंपरिक ज्ञान और कौशल का उपयोग क्रांतिकारियों के लिए किया। पहाड़िया जनजाति जंगल में क्रांतिकारियों को मार्गदर्शित करते थे, भोजन और आश्रय प्रदान करते थे और ब्रिटिश सेना की गति को बाधित करते थे।[23] 1857 ई० की क्रांति में पहाड़िया जनजातियों का योगदान ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध की भावना को दर्शाता है। उन्होंने अपनी पारंपरिक संस्कृति और ज्ञान का उपयोग करके 1857 ई० के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चेवो तेतरिया पहाड़िया ने पहाड़ी क्षेत्रों में अपने समुदाय के लोगों को संगठित कर उन्हें नेतृत्व प्रदान किया।[24] अपनी संगठन क्षमता और सबल नेतृत्व के कारण गबई गोधरा

नामक पहाड़िया काफी लोकप्रिय हो गए।[25] पहाड़िया समुदाय में इन्हें 'राजनीतिक जागरण का अग्रदूत' कहा जाता है।[26] उनके संघटनात्मक कार्यों से ब्रिटिश प्रशासन इतना घबरा गया की बारकोप में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई।[27]

1857 ई० का संग्राम और राजमहल क्षेत्र के संताल

1855 ई० के संताल हूल के तुरंत बाद प्रशासन का पुनर्गठन और कल्याणकारी कार्यों के संपादन के कारण एक वर्ग के रूप में संतालों ने 1857 ई० के संग्राम में भाग नहीं लिया।[28] हालांकि राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली में कुछ ऐसे मूल दस्तावेज उपस्थित है जो 1857 ई० के संग्राम की छिटपुट घटनाओं में कुछ संतालों कि भूमिका बताते है।[29]इन पत्रों का उपयोग 1857 ई० के आंदोलन पर किए गए एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन बिहार में 1857 ई० विवरण का पुनरीक्षण शाखा बिहार सरकार में किया गया था।[30]
जिले से 5वीं अनियमित घुड़सवार सेना को भेजने के साथ ही शांति कायम हो गई। संतालियों ने आमतौर पर जो साहस, ईमानदारी एवं स्वामी भक्ति ब्रिटिशो के प्रति 1857 ई० के आंदोलन के दौरान दिखने का काम किया, उस आधार पर सरकार ने उन लोगों की जाति से ही उस जिले के कार्य करने के लिए पुलिस दल तैयार करने का निर्णय लिया।[31] उन लोगों की सफलता, कार्य क्षमता, विभिन्न जलवायु के प्रभावों को बर्दाश्त कर सकते की शक्ति तथा सीधे–साधे स्वभाव आदि गुण ने सरकार का ध्यान आकर्षित किया और यह लोग उपरोक्त कार्यो को करने के लिए पूर्ण योग समझे गए। कुछ ही अवधि के लिए उन्हें बहाल किया गया तथा उन्हें एक साधारण बंदूक तथा उन्ही के युद्ध में काम आने वाली कुल्हाड़ी रखने का आदेश दिया गया। औपनिवेशिक शासन की स्वीकृति के आधार पर प्रारंभ में 200 संतालों की फौज में भर्ती की गई।[32]

1857 ई० के संग्राम का प्रभाव

राजमहल पर 1857 ई० के संग्राम का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह पड़ा कि 4 जुलाई 1860 ई० तक राजमहल को रेलवे से जोड़ दिया गया। बंबई से थाने के बाद यह देश कि दूसरी रेल लाइन थी। राजमहल क्षेत्र में व्यापार को बढ़ावा देने और जलमार्ग को रेल मार्ग से जोड़ने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी एवं ईस्ट इंडिया रेलवे ने संयुक्त रूप से एकरारनामा कर 17 अगस्त 1849 ई० को 1 मिलियन यूरो कि लागत से हावड़ा से वर्धमान होते हुए राजमहल रेलखंड का निर्माण आरंभ कराया गया। साथ ही राजमहल क्षेत्र से रेजिमेंट को हटाकर भागलपुर ले जाया गया। इस आंदोलन में बंगाली समुदाय को विशेष हानी उठानी पड़ी थी। 1857 ई० संग्राम के बाद भारत में सेना का पुनर्गठन किया गया। शासन द्वारा पील आयोग की रिपोर्ट पर जाति और धर्म के आधार पर रेजीमेंट को बाँट दिया गया और सेना में भारतीयों की अपेक्षा यूरोपीयों सैनिकों की संख्या को बढ़ा दिया गया।[33] 1857 ई० संग्राम के बाद देसी रियासतों की नीति में परिवर्तन किया गया। भारतीय रजवाड़ों के प्रति विजय और विलय की नीति का परित्याग कर सरकार ने राजाओं को बच्चे गोद लेने की अनुमति प्रदान की जिससे वे अपने वंश को आगे बढ़ा सकते थे।[34] इसने ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया।[35] भारत में शांति के पूरी तरह पुनर्स्थापित होने से पहले ही ब्रिटिश संसद ने 2 अगस्त 1858 ई० को भारत में बेहतर शासन के लिए एक कानून पारित किया। महारानी विक्टोरिया को ब्रिटिश भारत की महारानी घोषित किया और एक भारत सचिव (सेक्रेटरी आफ स्टेट फॉर इंडिया) की नियुक्ति का प्रावधान किया जो ब्रिटिश मंत्रिमंडल का सदस्य होता। यह कानून 1 नवंबर से लागू होना था और उस दिन महारानी ने एक घोषणा जारी की, जिसने धार्मिक सहिष्णुता का वादा किया और भारत पर उसके स्थापित रीति–रिवाज के अनुसार शासन का प्रस्ताव दिया।[36] भारत में ब्रिटिश राज की स्थिति के लिए इस संवैधानिक परिवर्तन का क्या अर्थ था, इसे बरनार्ड कोहन ने लिखा है "अवधारणा की दृष्टि से देखें तो अंग्रेज जिन्होंने 'बाहरी' के रूप में अपने शासन का आरंभ किया, अपनी महारानी को भारत की प्रमुख सत्ता से लैस करके 'अंदरूनी' बन बैठा।"[37]

उपसंहार

अन्ततः 1857 ई० के संग्राम परिणामस्वरूप भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत हुआ और ब्रिटिश राज की स्थापना हुई। किन्तु इस संग्राम ने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत किया और स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया। हालांकि यह संग्राम भारत के अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ राजमहल क्षेत्र में भी असफल रहा, फिर भी इसका प्रभाव न सिर्फ राजमहल और बंगाल बल्कि सम्पूर्ण भारत पर पड़ा। 19 वीं सदी के अंतिम भाग में आधुनिक राष्ट्रवाद का जन्म शिक्षित मध्य वर्गों की इसी कुंठा के परिणामस्वरूप हुआ। स्वाधीनता संग्राम में भारतीय जनता के लिए प्रेरणा का एक स्रोत प्रदान किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सूचीब्रता सेन, द संताल्स ऑफ जंगल महाल्स एन अग्रेरीअन हिस्ट्री 1793–1861, रत्ना प्रकाशन, कलकत्ता, 1984, पृष्ठ संख्या 128
2. शेखर बंद्योपाध्याय, पलासी से विभाजन तक और उसके बाद आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2015, पृष्ठ संख्या 170
3. विपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉ, हैदराबाद, 2009, पृष्ठ संख्या 129
4. पी. सी. राय चौधरी, 1857 इन बिहार (छोटानागपुर एण्ड संथाल परगनाज), गज़ेटियर्स रिवीजन ब्रांच, रेवेन्यू डिपार्टमेंट, पटना, पृष्ठ संख्या 31–44
5. वंदना सिंह, संथाल विद्रोह, जानकी प्रकाशन, पटना, 2009, पृष्ठ संख्या 130
6. वही
7. विनायक दामोदर सावरकर, दी इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857, राजधानी ग्रंथगार, दिल्ली, 1970, पृष्ठ संख्या 102–113
8. प्रमोद शर्मा (अनु.), संतालपरगना का इतिहास, झारखण्ड इन्साइक्लोपीडिया, हुलगुलानों की प्रतिध्वनियां, वाणी प्रकाश, खण्ड–I, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या 112; अन्य संदर्भः– वंदना सिंह, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 130
9. वही
10. वही
11. रणेन्द्र, सुधीरपाल (सं.), झारखण्ड इन्साइक्लोपीडिया, हुलगुलानों की प्रतिध्वनियां, वाणी प्रकाशन, खण्ड–I, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या 13
12. गृह विभाग (विधि) की कार्यवाही रिपोर्ट, अप्रैल, 1872, पृष्ठ संख्या 20–21
13. वंदना सिंह, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 130–31
14. देवशंकर चौधरी, झारखंड के रोहिणी गाँव से उठी विद्रोह की चिंगारी से कॉंप गई थी अंग्रेजी हुकूमत, नव भारत टाइम्स, 13 अगस्त, 2024, पृष्ठ संख्या 1–3
15. वही
16. वही
17. बैकुंठ नाथ झा, मातृ–बंधन मुक्ति–संग्राम में संथाल परगना, प्रसून बसु प्रकाशन, कलकत्ता, 1960, पृष्ठ संख्या 64–71
18. वही
19. सुरेश्वर नाथ एवं दिनेश नारायण वर्मा, राजमहल थ्रु द एजेस, प्रभात प्रिंटर्स, साहिबगंज, 1990, पृष्ठ संख्या 6

20. सुरेश्वर नाथ एवं दिनेश नारायण वर्मा, पहाड़िया जनजाति का संक्षिप्त इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या 9–10
21. के. के. दत्ता, द संताल इंसरेक्शन ऑफ़ 1855–57, यूनिवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता, 1988, पृष्ठ संख्या 163–170
22. सुरेश्वर नाथ एवं दिनेश नारायण वर्मा, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 31
23. वही, पृष्ठ संख्या 6
24. वकुल रस्तोगी, रमानंद कुमार पासवान, संथाल परगना के पहाड़िया जनजातियों का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान, आर. जे. पी. पी., मेरठ, वॉल्यूम–XXII, 2024, पृष्ठ संख्या 54
25. संध्या कुमारी, 1857 के संग्राम में झारखंड के आदिवासियों का योगदानः एक समीक्षात्मक अध्ययन, आई. जे. आर. ए. आर., बख्तियारपुर, 2020, पृष्ठ संख्या 937
26. के. के. दत्ता, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 163–169
27. वकुल रस्तोगी, रमानंद कुमार पासवान, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 54–55
28. वंदना सिंह, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 130
29. लेटर फ्रॉम द लोंयद्ध टू दी ग्रे, ज्यूडिशियल प्रोसिडिंग्स, पश्चिम बंगाल राज्य अभिलेखागार, कलकत्ता, 6 दिसंबर 1855
30. मिलिट्री कंसल्टेशन रिपोर्ट, विदेश गुप्त विभाग, कलकत्ता, 29 मई 1858, पृष्ठ संख्या 59
31. पी. सी. राय चौधरी, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 28
32. वही
33. गोवर्धनलाल पुरोहित, स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास (1857 से 1947 तक), राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, 1976, पृष्ठ संख्या 45–46
34. सच्चिदानंद भट्टाचार्या, भारतीय इतिहास कोश, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पंचम संस्करण, 2013, पृष्ठ संख्या 104–108
35. शेखर बंद्योपाध्याय, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ संख्या 178–179
36. वही
37. वर्नाड एस. कोहन, रेप्रेजेन्टिग ऑथरिटी इन विक्टोरियन इंडिया, ई. हॉवस्वाम एण्ड टी. रेंजर (सं.), द इन्वेन्शन ऑफ ट्रेडिशन, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, 1992, पृष्ठ संख्या 165